RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 10th लोकतांत्रिक राजनीति

# ARJUN BATCH

## जाति, धर्म और लैंगिक मसले

# ONE SHOT

पूरा चैप्टर एक ही क्लास में ...

LIVE | 23 SEP | 6:30 PM



# लिंग विभाजन



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# उदाहरण

## ग्रामीण महिलाएँ

- पानी लाना
- ईंधन एकत्र करना
- खेतों में काम करना (अवैतनिक)

## शहरी महिलाएँ

- घरेलू सहायिका
- कार्यालय कर्मचारी (वेतन प्राप्त, लेकिन पुरुषों से कम)

# नारीवादी

एक महिला या पुरुष जो महिलाओं और पुरुषों के लिए समान अधिकारों और अवसरों में विश्वास करता है।



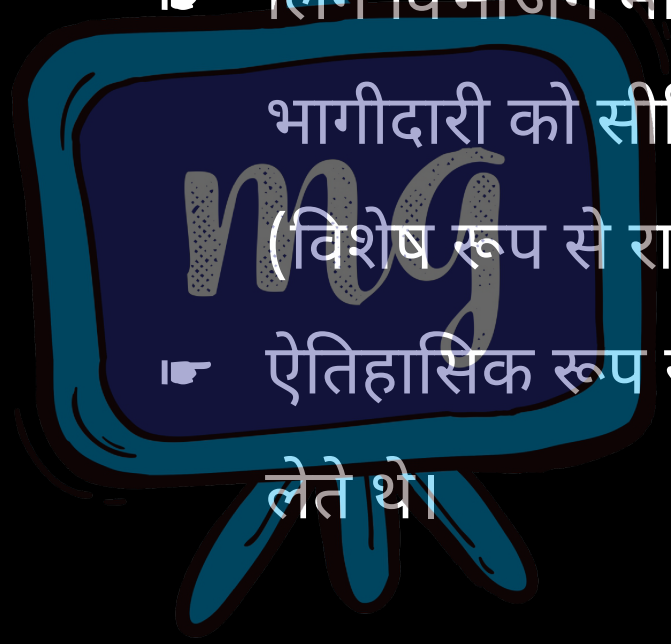
# पितृसत्ता

- शाब्दिक रूप से, "पिता का शासन"।
- एक प्रणाली जो पुरुषों को अधिक महत्व देती है और उन्हें महिलाओं पर शक्ति देती है।



# सार्वजनिक जीवन में लिंग विभाजन

- लिंग विभाजन महिलाओं की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी को सीमित करता है।
  (विशेष रूप से राजनीति)
- ऐतिहासिक रूप से, केवल पुरुष ही राजनीति में भाग लेते थे।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

☛ नारीवादी आंदोलनों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया : -

- मतदान अधिकार
- सुधरी हुई राजनीतिक और कानूनी स्थिति
- शैक्षिक और कैरियर के अवसर
- व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में समानता

# प्रगति

- महिलाएँ अब उन व्यवसायों में प्रवेश कर रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए अनुपर्युक्त माना जाता था।
- कुछ देशों में सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी उच्च है।



☛ महिलाएँ विभिन्न तरीकों से नुकसान, भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करती हैं : -



| I | शिक्षा |
|---|---|
| 1. | कम महिला साक्षरता दर |
| 2. | उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों की संख्या कम |
| 3. | बेटों की शिक्षा में निवेश करने की माता-पिता की प्राथमिकता |

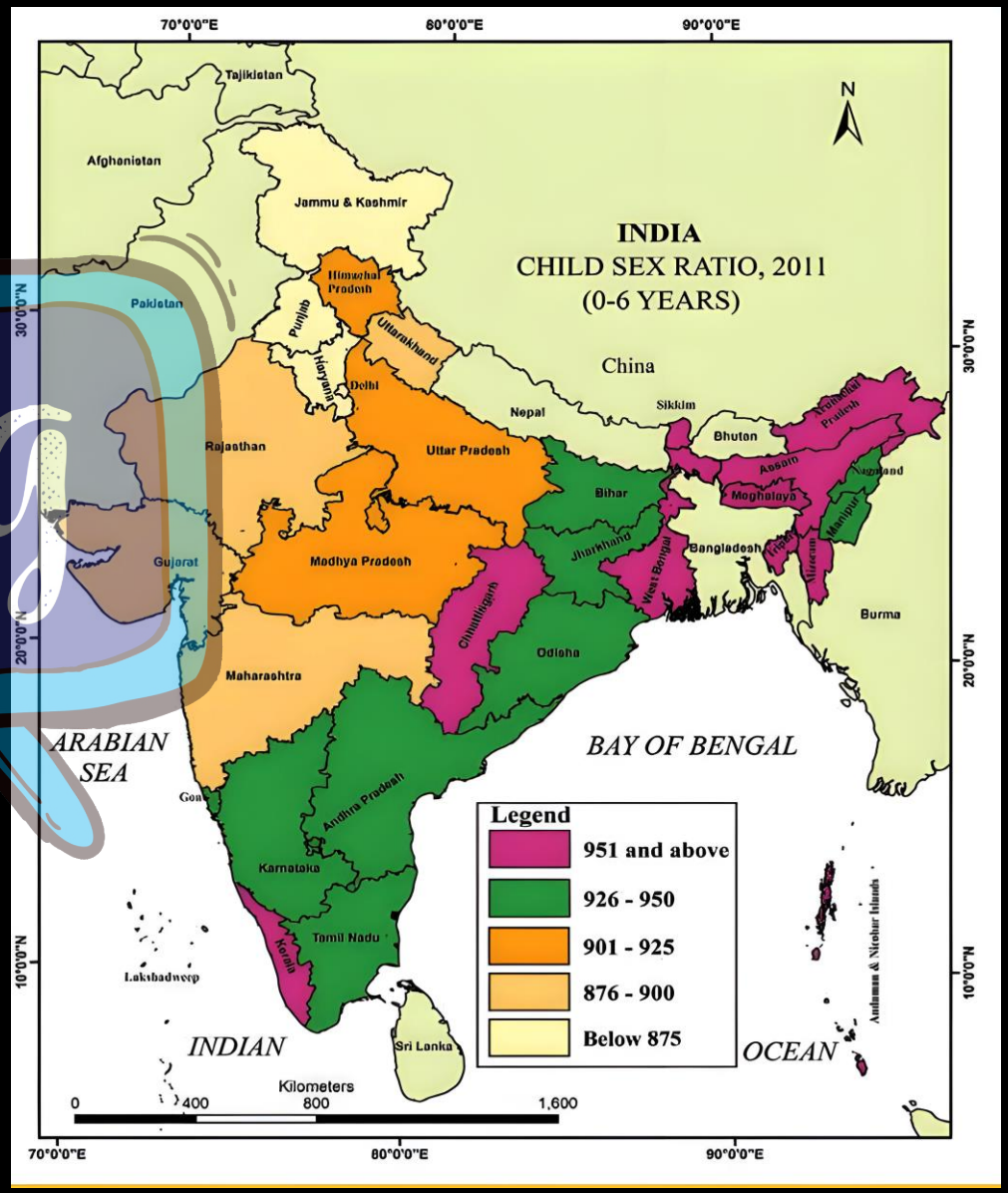
| II | रोजगार |
|---|---|
| 1. | उच्च-मूल्यवान नौकरियों में प्रतिनिधित्व की कमी |
| 2. | अधिक समय तक काम |
| 3. | समान पारिश्रमिक अधिनियम (1976) मौजूद है;<br>लेकिन, प्रभावी रूप से लागू नहीं किया गया |

# III स्वास्थ्य और सुरक्षा

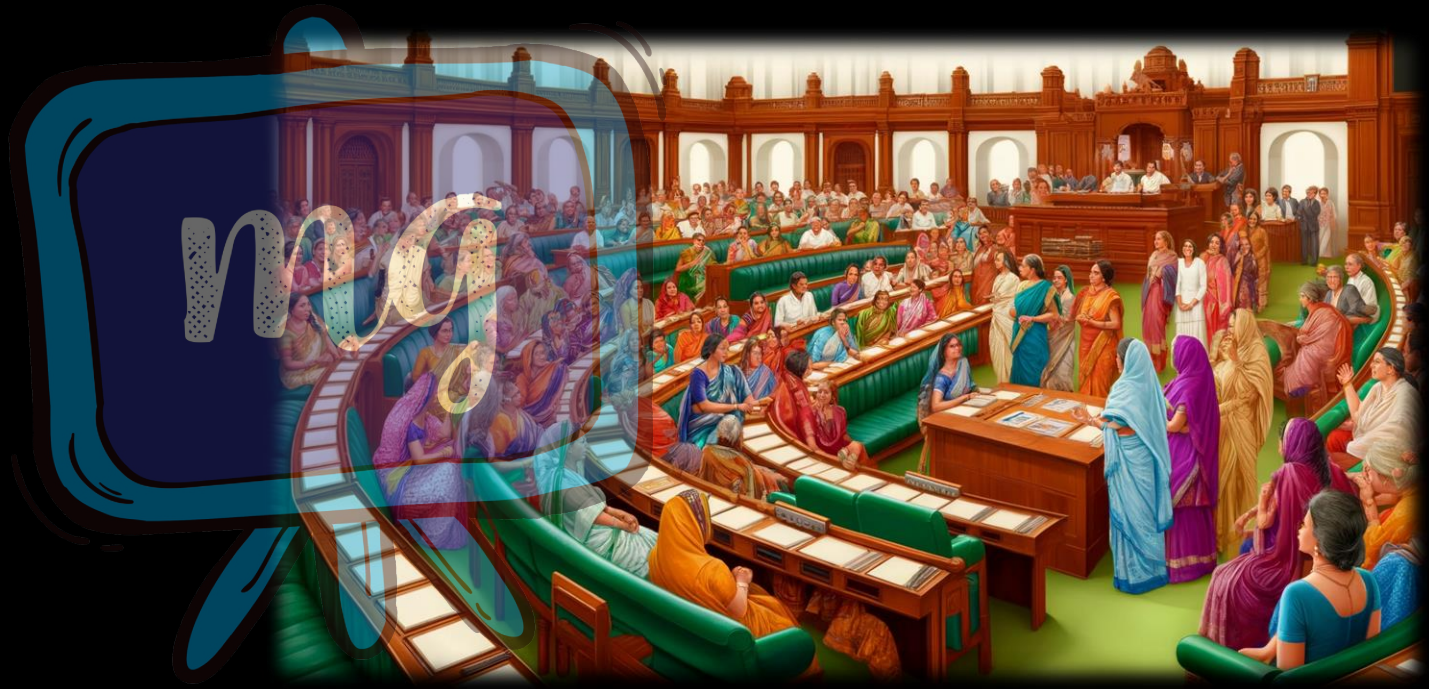
1. लिंग चयनात्मक गर्भपात और गिरती बाल लिंग अनुपात
2. व्यापक उत्पीड़न, शोषण और हिंसा
3. घर के भीतर घरेलू हिंसा

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



# महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व



# वैश्विक तुलना

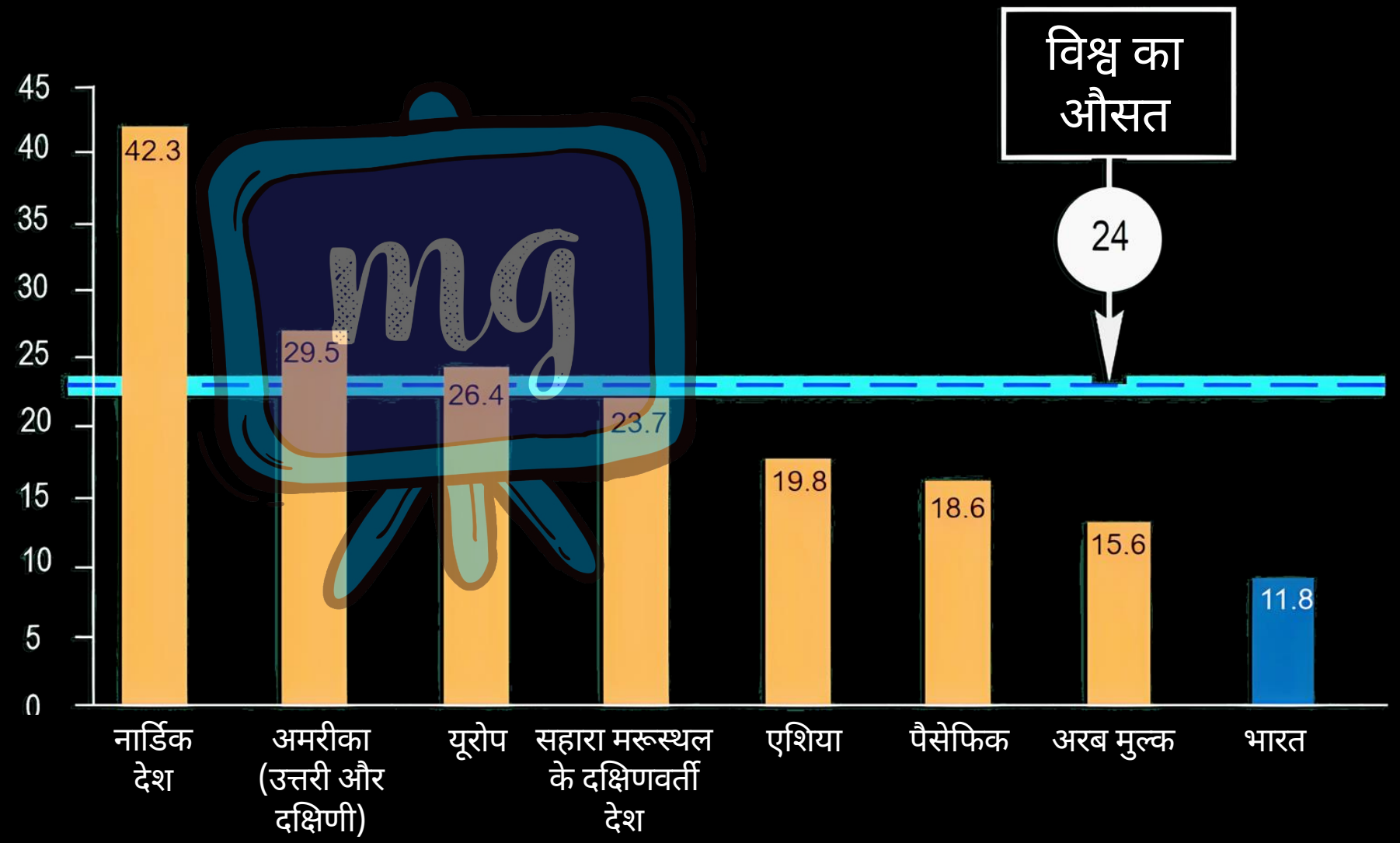
- महिला विधायी प्रतिनिधित्व में भारत कई विकासशील देशों से पीछे है।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

# विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की राष्ट्रीय संसदों में महिलाओं की संख्या (%)



# नारीवादी दृष्टिकोण

कई नारीवादियों का मानना है कि महिलाओं के मुद्दों को तब तक पर्याप्त ध्यान नहीं मिलेगा जब तक महिलाएँ शक्ति के पदों पर नहीं होंगी।



# नारी शक्ति वंदन अधिनियम

- 2023 में, नारी शक्ति वंदन अधिनियम (महिला आरक्षण अधिनियम, 2023) पारित किया गया
- यह अधिनियम महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत सीटों का आरक्षण प्रदान करता है।
  - लोकसभा
  - राज्य विधानसभाएँ

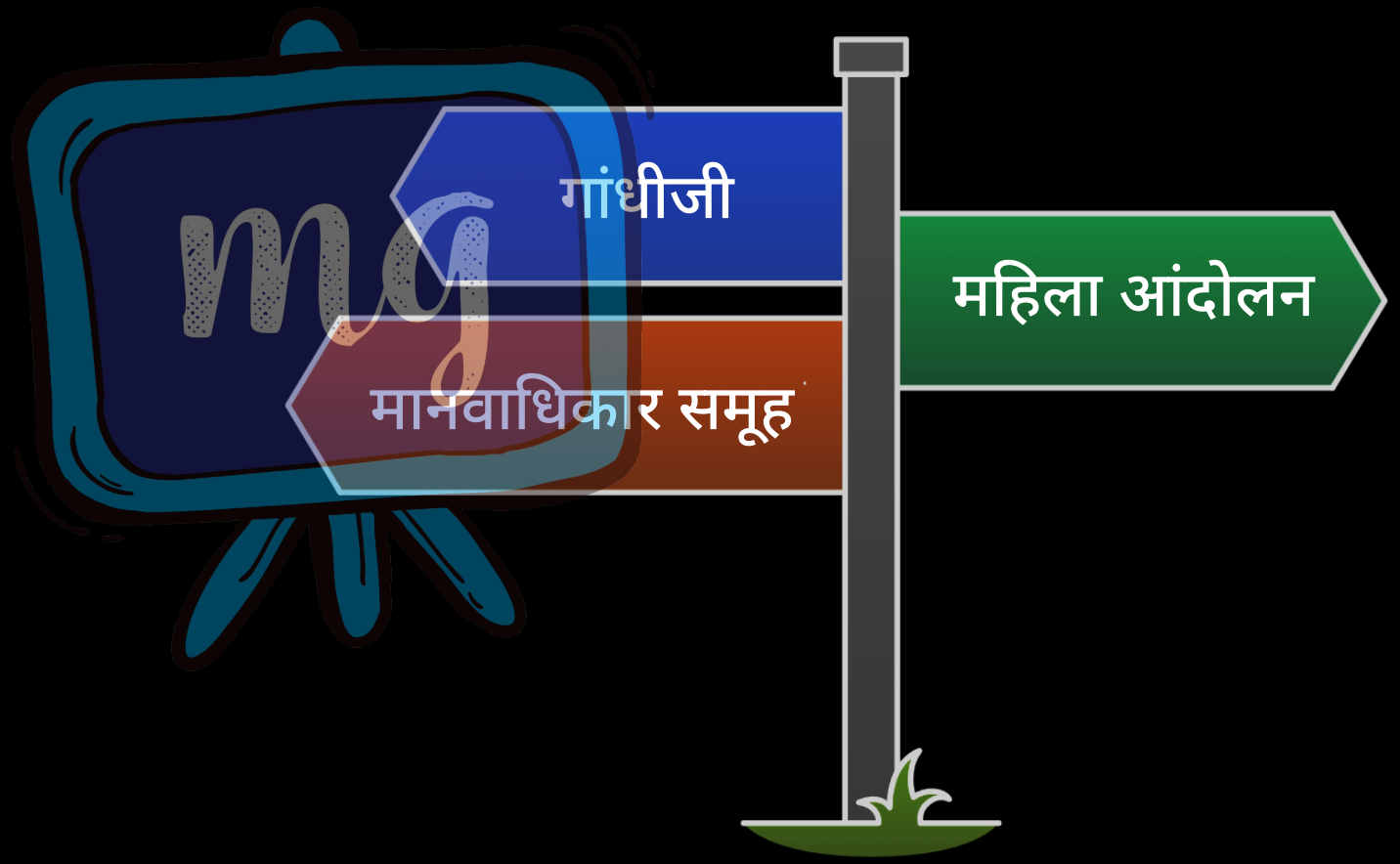
# सांप्रदायिकता

- विभिन्न देशों में अलग-अलग धर्मों को मानने वाले लोग

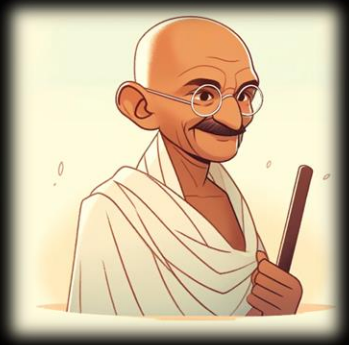
**उदाहरण :** भारत



# विभिन्न समूहों के दृष्टिकोण



| I | गांधीजी |
|---|---|



- धर्म को कभी भी राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता।
- **धर्म** - हिंदू या इस्लाम जैसे धर्म से न होकर नैतिक मूल्यों से जो सभी धर्मों से जुड़े है।
- राजनीति धर्म द्वारा स्थापित मूल्यों से निर्देशित होनी चाहिए।

| II | मानवाधिकार समूह |
|---|---|

सांप्रदायिक दंगों को रोकने और धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए विशेष कदम उठाना चाहिए।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# III महिला आंदोलन



सभी धर्मों के पारिवारिक कानून महिलाओं के साथ भेदभाव करते हैं।

सरकार को इन कानूनों को समतामूलक बनाने के लिए उनमें बदलाव करने चाहिए।

# पारिवारिक कानून

☛ वे कानून जो परिवार से संबंधित मामलों जैसे : -



# सांप्रदायिक राजनीति

लोगों को विभाजित करने और राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए धर्म का उपयोग करना।



# सांप्रदायिक सोच



धर्म सामाजिक समुदाय का मुख्य आधार है।

एक विशेष धर्म के अनुयायी एक समुदाय से संबंधित होना चाहिए।

विभिन्न धर्मों का पालन करने वाले लोग एक ही सामाजिक समुदाय से संबंधित नहीं हो सकते।

विभिन्न धर्मों के लोग एक ही राष्ट्र के भीतर समान नागरिक के रूप में नहीं रह सकते।

# साम्प्रदायिक सोच में खामियाँ

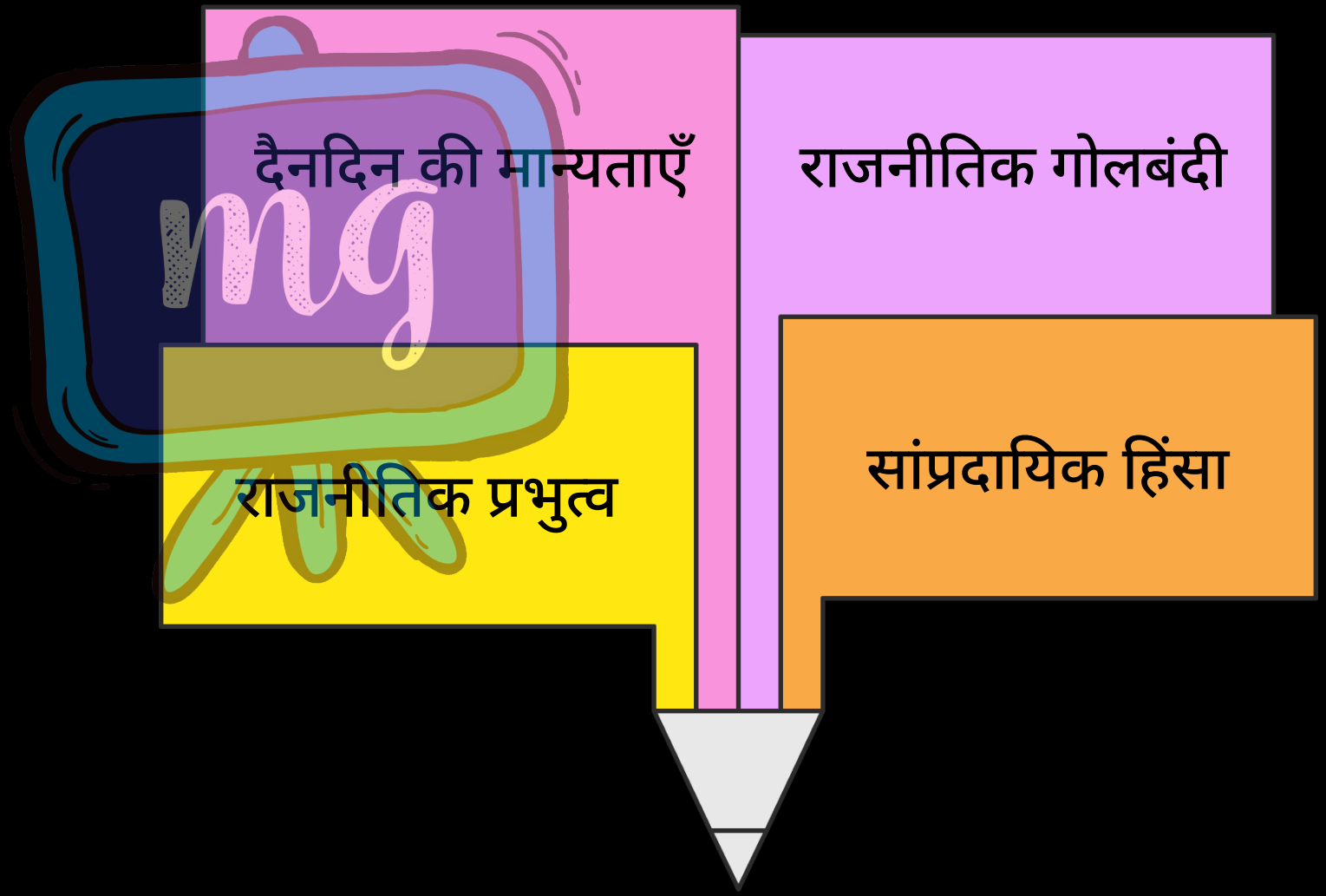


एक धर्म, अलग-अलग हित।

कई अन्य भूमिकाएँ, पद और पहचान।

हर समुदाय के अंदर कई आवाजें होती हैं।

# साम्प्रदायिकता राजनीति में विभिन्न रूप



1. सांप्रदायिकता की सबसे आम अभिव्यक्ति दैनंदिन जीवन में ही दिखती है।

☛ धार्मिक पूर्वाग्रह, धार्मिक समुदायों के बारे में बनी बनाई धारणाएँ।

✧ एक धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ मानने की मान्यताएँ शामिल हैं।

2. सांप्रदायिक सोच अक्सर अपने धार्मिक समुदाय का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के फिराक में रहती है।

☛ बहुसंख्यक समुदाय की कोशिश बहुसंख्यकवाद का रूप ले लेती है, जबकि अल्पसंख्यक समुदाय में यह विश्वास अलग राजनीतिक इकाई बनाने की इच्छा का रूप ले लेता है।

## 3. सांप्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबंदी

- धर्म के पवित्र प्रतीकों, धर्मगुरुओं, भावनात्मक अपील और अपने ही लोगों के मन में डर बैठाने जैसे तरीकों का उपयोग बहुत आम।
- चुनावी राजनीति में एक धर्म के मतदाताओं की भावनाओं या हितों की बात उठाने जैसे तरीके अक्सर अपनाए जाते हैं।

## 4. कई बार सांप्रदायिकता सबसे गंदा रूप लेकर समुदाय के आधार पर हिंसा, दंगा और नरसंहार कराती है

- विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान में भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे।
- आज़ादी के बाद भी बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक हिंसा हुई।

# धर्मनिरपेक्ष भारत की मुख्य विशेषताएँ



राज्य ने किसी भी धर्म को राजकीय धर्म के रूप में अंगीकार नहीं किया

धर्म का पालन करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता

राज्य धर्म के आधार पर भेदभाव अवैधानिक

# धर्मनिरपेक्षता बनाम सांप्रदायिकता

- धर्मनिरपेक्षता कुछ पार्टियों या व्यक्तियों की एक विचारधाराभर नहीं है। यह विचार हमारे संविधान की बुनियाद हैं।
- सांप्रदायिकता भारत में सिर्फ कुछ लोगों के लिए ही एक खतरा नहीं।
  - यह भारत की बुनियादी अवधारणा के लिए चुनौती है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हमें आवश्यकता है:
  - दैनंदिन की जिंदगी में सांप्रदायिक पूर्वाग्रह और दुष्प्रचारों का मुकाबला होगा।
  - धर्म पर आधारित राजनीतिक गोलबंदी राजनीति के दायरे में करने की जरूरत।



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



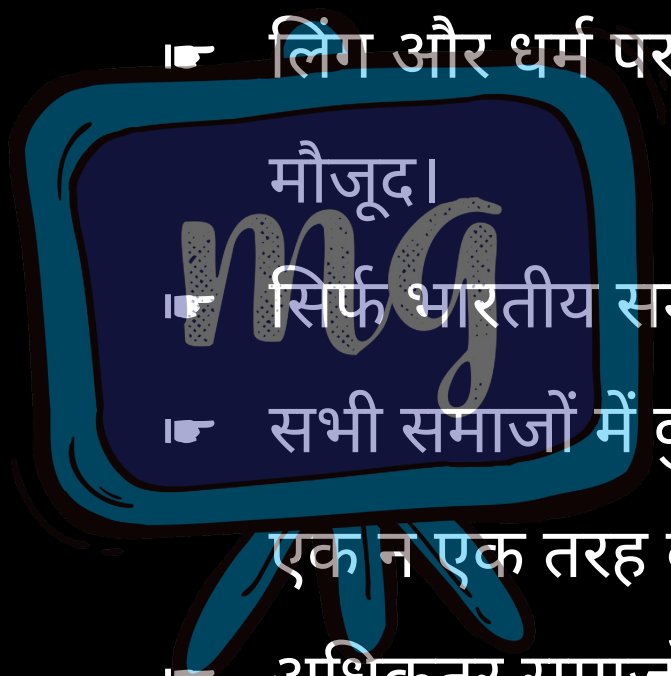

सकारात्मक

नकारात्मक

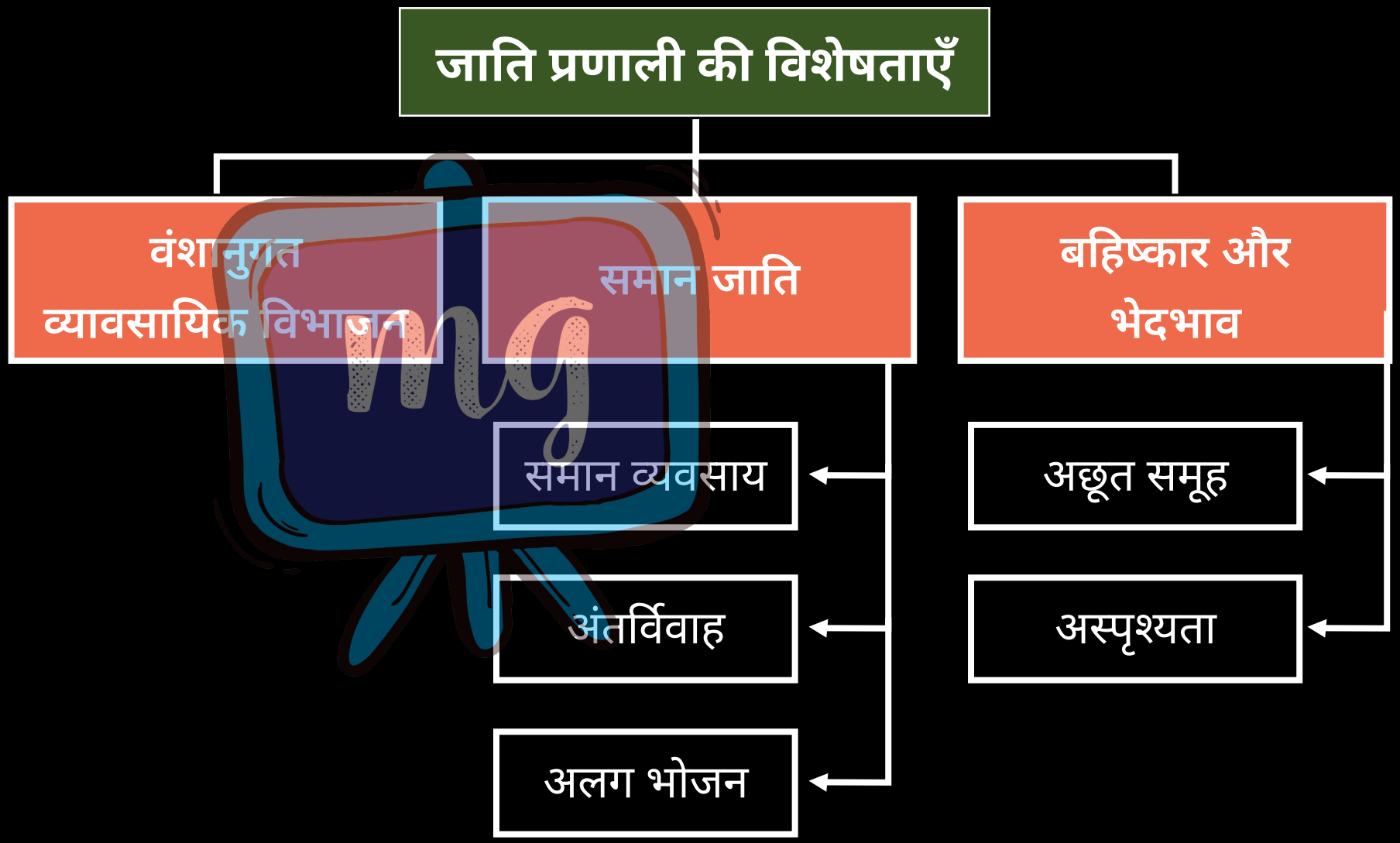
RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# जातिगत असमानताएँ



- लिंग और धर्म पर आधारित विभाजन तो दुनियाभर में मौजूद।
- सिर्फ भारतीय समाज में ही जाति आधारित विभाजन।
- सभी समाजों में कुछ सामाजिक असमानताएँ और एक न एक तरह का श्रम का विभाजन मौजूद।
- अधिकतर समाजों में पेशा परिवार की एक पीढ़ी से दूसरी पीढी में स्थानान्तरित।

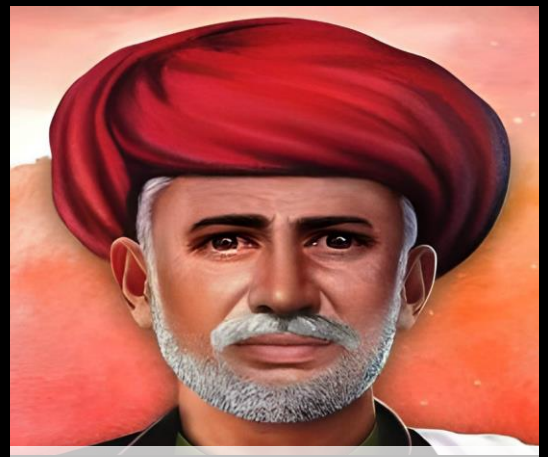

जाति प्रणाली की विशेषताएँ
वंशानुगत व्यावसायिक विभाजन
समान जाति
बहिष्कार और भेदभाव
समान व्यवसाय
अंतर्विवाह
अलग भोजन
अछूत समूह
अस्पृश्यता

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



पेरियार रामास्वामी नायकर



ज्योतिबा फुले

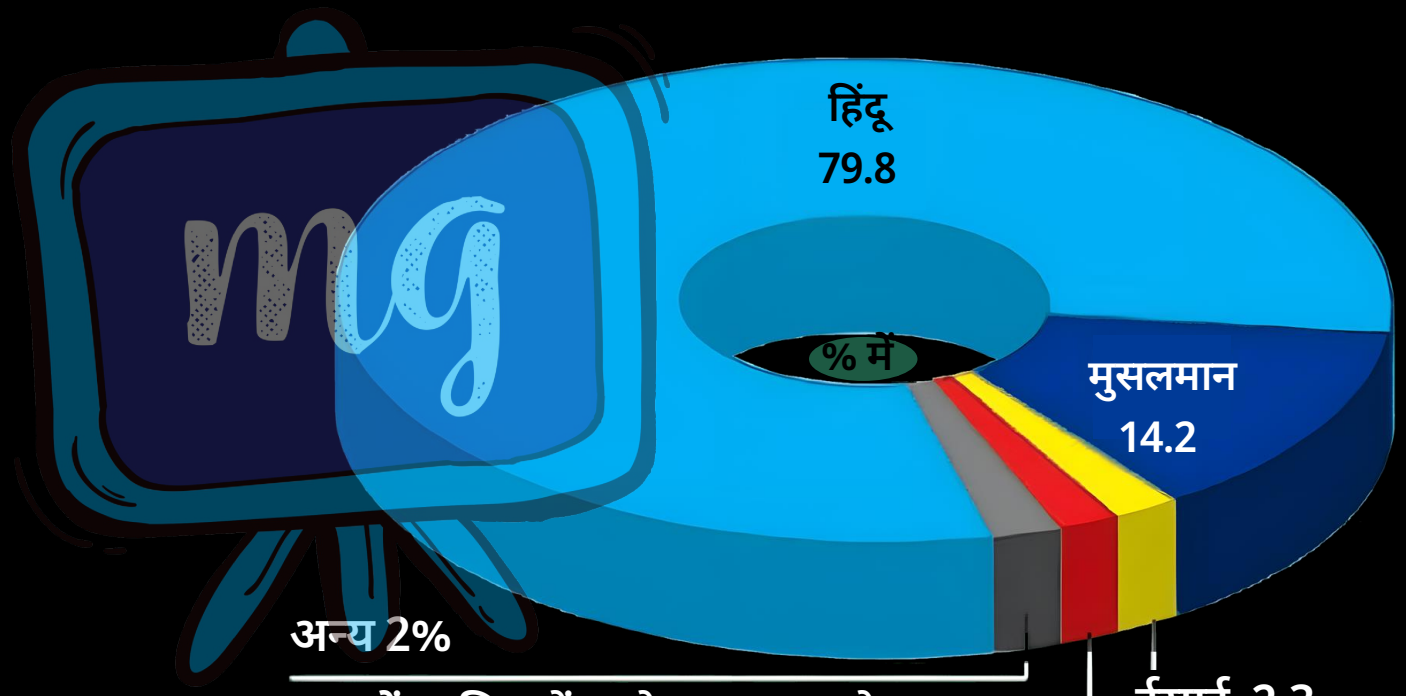


महात्मा गाँधी



बी.आर. अम्बेडकर

# भारत की सामाजिक और धार्मिक विविधता



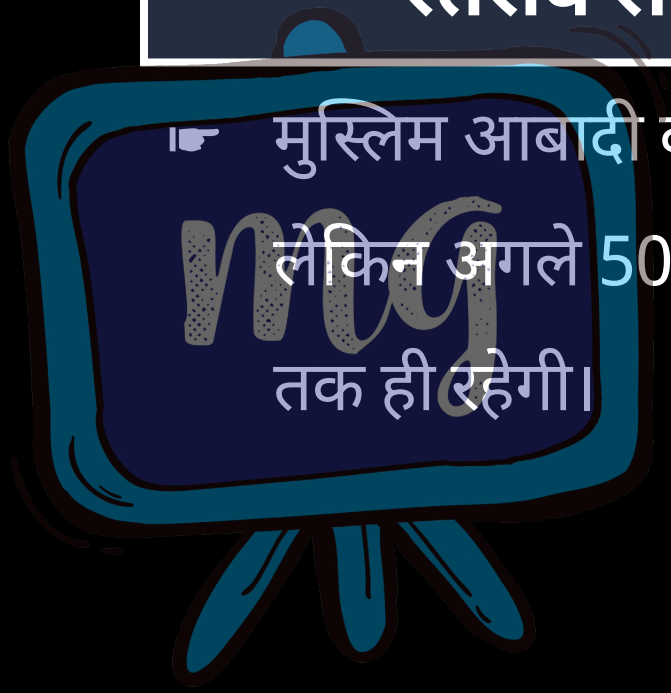

अन्य में शामिल हैं – बौद्ध-0.7%, जैन-0.4%

अन्य धर्म-0.7%

कोई धर्म नहीं-0.2%:

स्रोत: जनगणना, 2011

# प्रधानमंत्री द्वारा नियुक्त उच्च स्तरीय समिति (सच्चर समिति)



- मुस्लिम आबादी का अनुपात थोड़ा जरूर बढ़ेगा लेकिन अगले 50 वर्षों में यह बढ़ोतरी 3 से 4 प्रतिशत तक ही रहेगी।

# भारत में सामाजिक समूह



# जाति और आर्थिक असमानता



**कारण**

यह विभिन्न प्रकार के संसाधनों तक पहुँच को नियंत्रित करता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

## उदाहरण

- तथाकथित अछूत जाति
  - भूमि का अधिकार नहीं
- तथाकथित द्विज जाति
  - शिक्षा का अधिकार



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

| गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर करने वालों का प्रतिशत अनुपात, 1999–2000 | | |
|---|---|---|
| **जाति और समुदाय** | **ग्रामीण** | **शहरी** |
| अनुसूचित जनजातियाँ | 45.8 | 35.6 |
| अनुसूचित जातियाँ | 35.9 | 38.3 |
| अन्य पिछड़ी जातियाँ | 27.0 | 29.5 |
| मुसलमान अगड़ी जातियाँ | 26.8 | 34.2 |
| हिन्दू अगड़ी जातियाँ | 11.7 | 9.9 |
| ईसाई अगड़ी जातियाँ | 9.6 | 5.4 |

| गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर करने वालों का प्रतिशत अनुपात, 1999–2000 | | |
|---|---|---|
| जाति और समुदाय | ग्रामीण | शहरी |
| ऊँची जाति के सिख | 0.0 | 4.9 |
| अन्य अगड़ी जातियाँ | 16.0 | 2.7 |
| सभी समूह | 27.0 | 23.4 |

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

# राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण से प्राप्त साक्ष्य

- 'ऊँची' जाति के लोगों की आर्थिक स्थिति सबसे अच्छी है।
- आज सभी जातियों में अमीर लोग पर ऊँची जाति वालों का अनुपात बहुत ज़्यादा है और निचली जातियों का बहुत कम।

# कारण

- आर्थिक विकास
- बड़े पैमाने पर शहरीकरण
- साक्षरता और शिक्षा का विकास
- पेशा चुनने की आज़ादी
- गांवों में जमींदारों की स्थिति कमजोर होना
- जाति-आधारित भेदभाव को निषिद्ध कर दिया
- वर्ण व्यवस्था पर टिकी मानसिकता में बदलाव

# जाति व्यवस्था के कुछ पुराने पहलू



विवाह

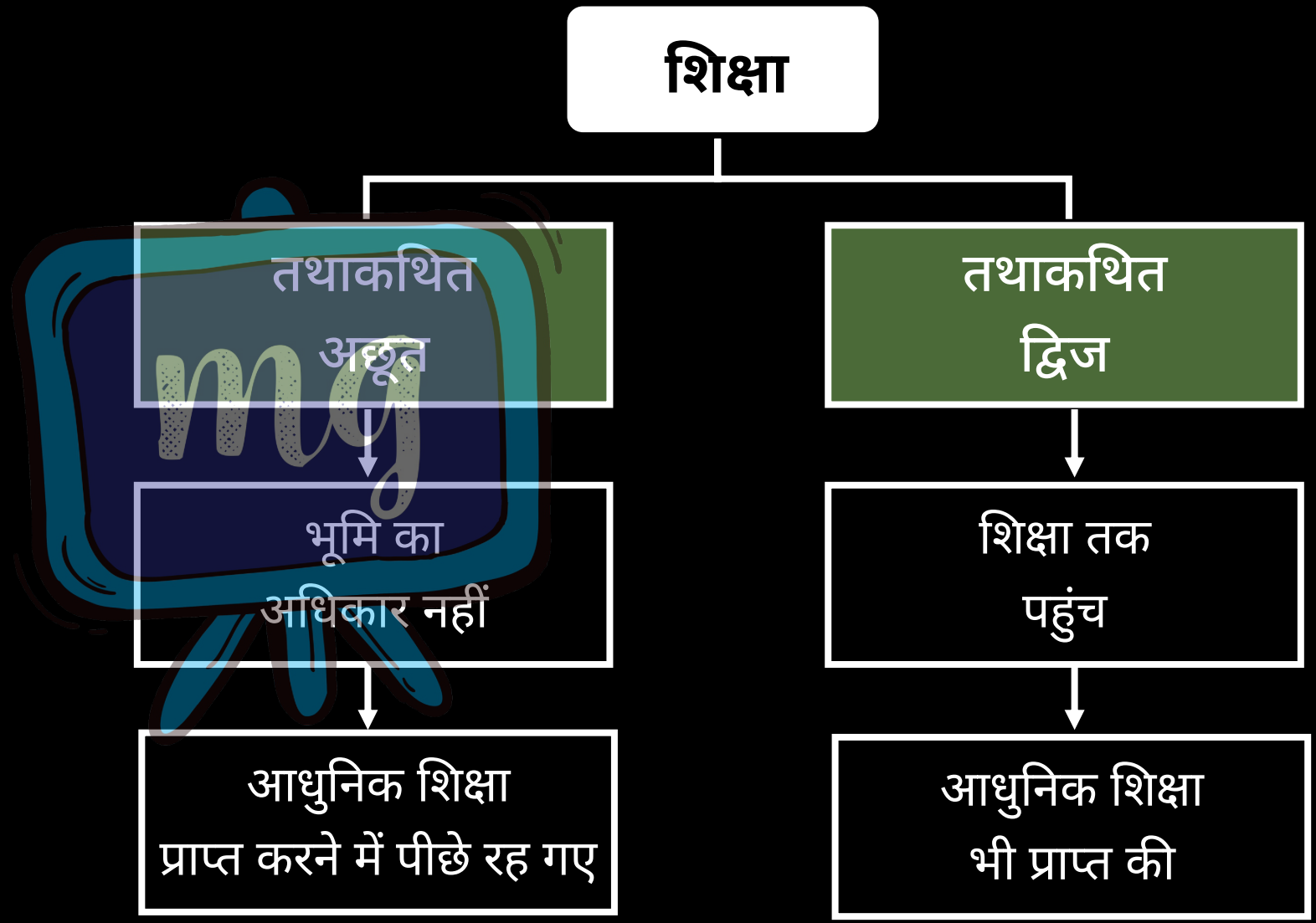
अस्पृश्यता

शिक्षा

अर्थव्यवस्था

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



# राजनीति में जाति



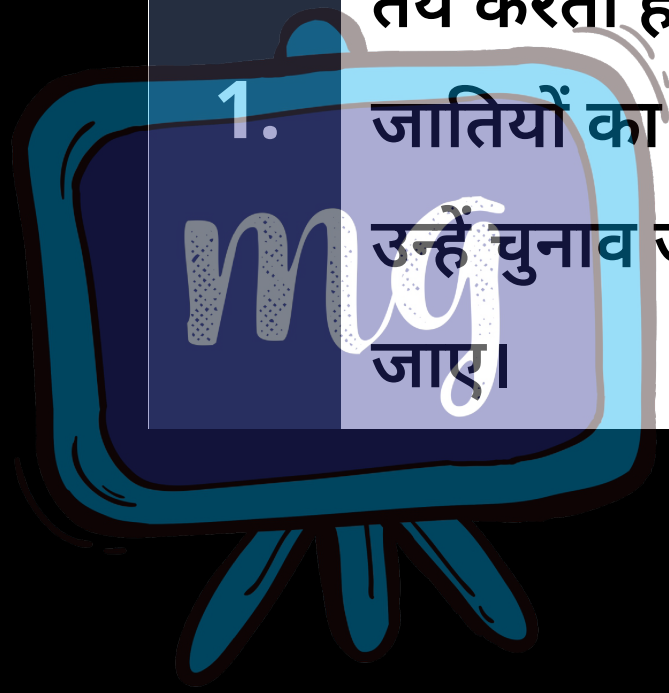

अपील

सरकार का गठन

कुछ राजनीतिक दल कुछ जातियों को प्राथमिकता

सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार

1. जब पार्टियाँ चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नाम तय करती हैं तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखती हैं ताकि उन्हें चुनाव जीतने के लिए ज़रूरी वोट मिल जाए।



2. राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवार समर्थन हासिल करने के लिए जातिगत भावनाओं को उकसाते हैं।



3. जब सरकार का गठन किया जाता है तो राजनीतिक दल इस बात का ध्यान रखते हैं कि उसमें विभिन्न जातियों और कबीलों के लोगों को उचित जगह दी जाए।

| | |
|---|---|
| 4. | कुछ दलों को कुछ जातियों के मददगार और प्रतिनिधि के रूप में देखा जाता है। |
| 5. | सार्वभौम वयस्क मताधिकार और एक व्यक्ति-एक वोट की व्यवस्था ने राजनीतिक दलों को विवश किया कि वे राजनीतिक समर्थन पाने और लोगों को गोलबंद करने के लिए सक्रिय हों। इससे उन जातियों के लोगों में नयी चेतना पैदा हुई जिन्हें अभी तक छोटा और नीच माना जाता था। |

# जाति सब कुछ नहीं है

1. कोई एकल जाति निर्वाचन क्षेत्रों में हावी नहीं होती

2. एक ही जाति के सभी लोग एक ही तरह से वोट नहीं देते

3. कई राजनीतिक दल उसी जाति के उम्मीदवार खड़े कर सकते हैं

4. सत्तारूढ़ दल हार जाते हैं

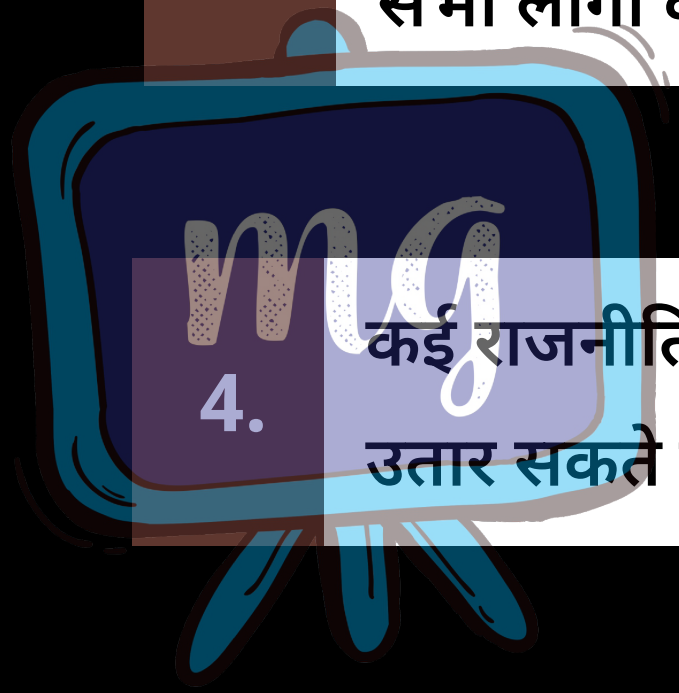
5. अन्य कारक जैसे पार्टी वफादारी, वर्ग, नेता की लोकप्रियता भी वोटों को प्रभावित करते हैं



1. देश के किसी भी एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति के लोगों का बहुमत नहीं है

2. इसलिए हर पार्टी और उम्मीदवार को चुनाव जीतने के लिए एक जाति और एक समुदाय से ज़्यादा लोगों का भरोसा हासिल करना पड़ता है।

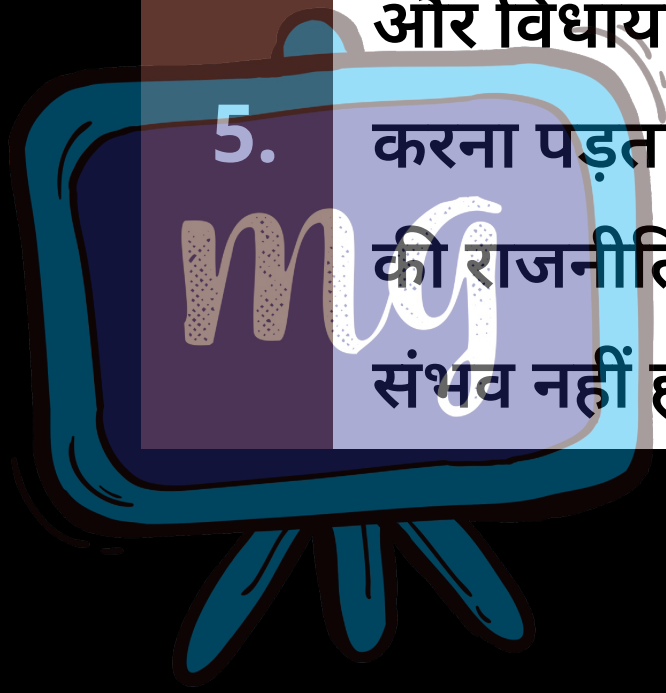
3. कोई भी पार्टी किसी एक जाति या समुदाय के सभी लोगों का वोट हासिल नहीं कर सकती।



4. कई राजनीतिक दल एक ही जाति से उम्मीदवार उतार सकते हैं

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



5. हमारे देश में सत्तारूढ़ दल, वर्तमान सांसदों और विधायकों को अक्सर हार का सामना करना पड़ता है। अगर जातियों और समुदायों की राजनीतिक पसंद एक ही होती तो ऐसा संभव नहीं हो पाता।

# अन्य कारक चुनावों में



पार्टी से जुड़ाव की प्राथमिकता देना

आर्थिक वर्ग के आधार पर अलग-अलग मतदान प्राथमिकताएं

सरकार का काम और नेता की लोकप्रियता

# जाति व्यवस्था पर राजनीति का प्रभाव



हर जाति खुद को बड़ा बनाना चाहती है

अन्य जातियों के साथ गठबंधन

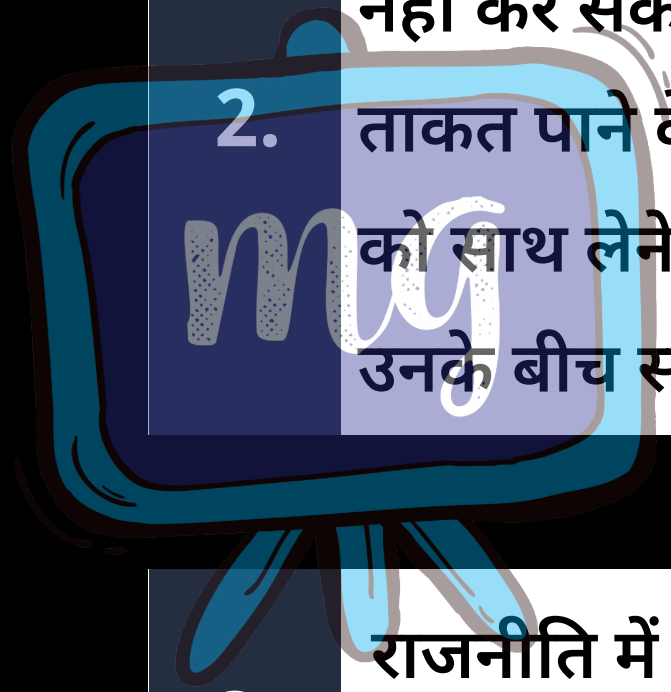
पिछड़े और अगड़े जाति समूह

1. हर जाति खुद को बड़ा बनाना चाहती है। पहले जो उप-जातियाँ छोटी या नीची बताकर अपने से बाहर रखी जाती थीं, अब उन्हें अपने साथ लाने की कोशिश की जा रही है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

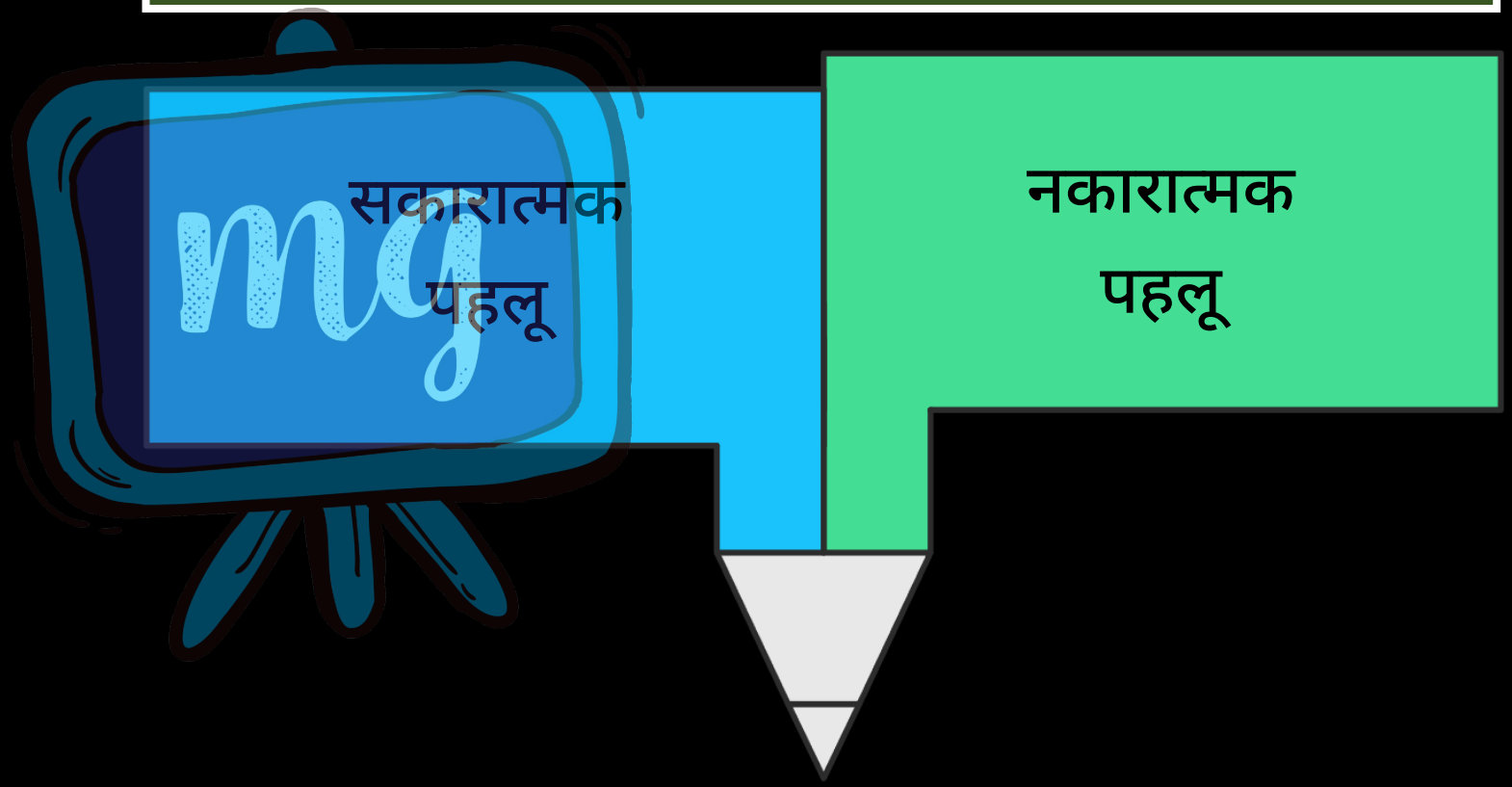
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. चूँकि एक जाति अपने दम पर सत्ता पर कब्ज़ा नहीं कर सकती, इसलिए वह ज्यादा राजनीतिक ताकत पाने के लिए दूसरी जातियों या समुदायों को साथ लेने की कोशिश करती है। इस तरह उनके बीच संवाद और मोल-तोल होता है।



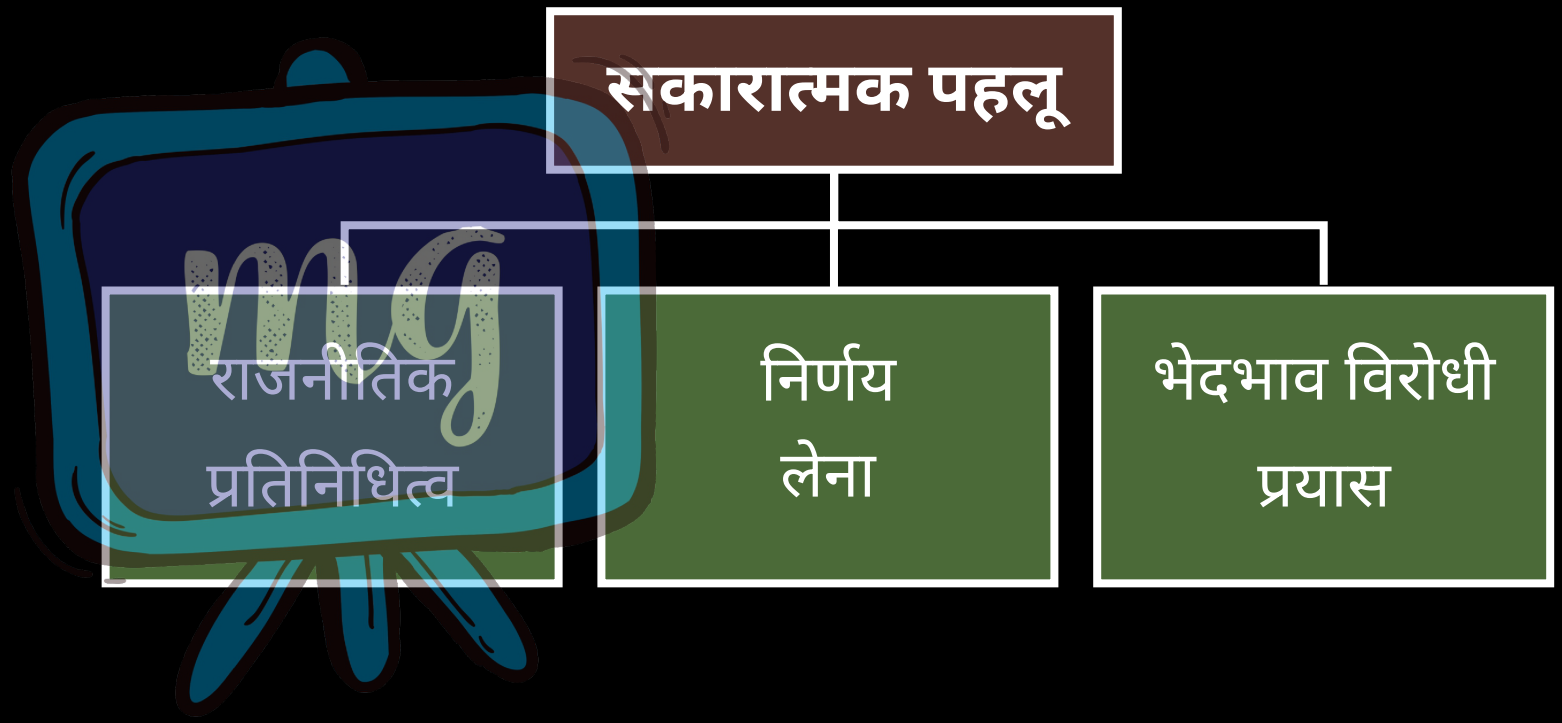
3. राजनीति में नए किस्म की जातिगत गोलबंदी भी हुई है, जैसे 'अगड़ा' और 'पिछड़ा'।

# राजनीति में जाति की भूमिका



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



## नकारात्मक पहलू

- लोकतंत्र का स्वास्थ्य
- मुख्य मुद्दों से भटकाव
- संघर्ष और हिंसा

# शहरीकरण

ग्रामीण इलाकों से निकलकर लोगों का शहरों में बसना।



# व्यावसायिक गतिशीलता

एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में बदलाव, आमतौर पर जब नई पीढ़ी अपने पूर्वजों द्वारा अपनाए गए व्यवसायों के अलावा कोई अन्य व्यवसाय अपनाती है



# वर्ण-व्यवस्था

- अन्य जाति समूहों से भेदभाव और उन्हें अपने से अलग मानने की धारणा पर आधारित है।
- इसमें 'अत्यज' जातियों के साथ छुआछूत का व्यवहार किया जाता था।

